ॐ ब्रह्म सर्वम्

-: संकल्पयोग या प्रार्थनायोग :-

देशकी और सबकी सभी समस्याओंके समाधानके लिए तथा सबकुछके लिए सर्वानुगत, सर्वसुलभ, अमोघ, निरापद और श्रेष्ठ उपाय है– संकल्पयोग या प्रार्थनायोग। प्रार्थना या संकल्प इसप्रकार है–

1. हे अनन्त आनन्दस्वरूप! मैं अपने स्वजनों सहित स्वस्थ और संयमी रहूँ। जीवनमें सद्भाव, सद्विवेक और प्रतिभा विकसित हों। हम सम्पन्न और सद्विद्याके अनुभवी हो जायँ।

2. हे अनन्तशक्ति शास्ता! विविक्तका सर्वथा समादर करूँ। भारतदेशमें सर्वत्र सद्भावी-योग्य व्यक्ति ही अबाध प्रशासन करें। सर्वत्र अध्यात्मोन्मुखी शिक्षा, प्रार्थनायोग तथा हिन्दू-एकत्वभाव यथाशीघ्र प्रतिष्ठित हों।

3. हे सर्वसमाधानस्वरूप, सर्वयोगक्षेम प्रदाता! मेरे हितकारी संकल्प सिद्ध हो जायँ। मैं आपकी शरणमें हूँ।

-: सम्पूर्ण जीवनके लिये संकल्प-साधना :-

1. हे प्राज्ञ परमात्मा! मुझ प्रकाशककी बुद्धि भ्रान्तियोंसे मुक्त रहे और मन परस्पर सद्भावसे युक्त रहे।

2. हे निरामय ! सुषुप्ति, संयम व भूख-विज्ञानके द्वारा यह शरीर सर्वथा स्वस्थ रहे और बाहरी परिवेश अनुकूल रहे।

3. हे ज्ञानानन्दस्वरूप! आनन्दमयकोषके अतिक्रमणपूर्वक अपनी तथा जगत्की वास्तविकताका सम्पूर्ण अनुभव व्यक्त हो जाय।

4. सब जगह, सब समय, सब रूपोंमें उपस्थित हे महान् पुरुष! अनन्त अद्वय अविलुप्त आनन्दस्वरूप जाग्रतिरूप ध्यानसे मेरे जीवनमें सर्वात्मभाव अभिव्यक्त रहे।

5. हे सच्चिदानन्द सिद्धसंकल्प! सुखदुःखाभास तथा समस्याकी आहट पाते ही मैं प्रार्थना, तदीक्षण या सुषुप्तिशेषके ध्यानमें लग जाऊँ।

6. हे सर्वशक्तिमानोम्! मेरे सर्वहितकारी संकल्प शीघ्र सिद्ध हो जाएँ और विवेकसे प्राप्त समझका सर्वथा समादर करूँ।

7. हे अनन्त आनन्दस्वरूप! श्रद्धा-विजिज्ञासा-संयमपूर्वक और स्मृति-मेधा-प्रतिभापूर्वक शिक्षा तथा शिक्षणमें पूर्ण योग्य हो जाऊँ।

8. हे सर्वसमाधानस्वरूप! सर्वयोगक्षेम प्रदाता! मेरा और

सद्‌भावी लोगोंका जीवन सम्पन्न रहे।

9. हे चैतन्य चिन्तामणि! भारतदेशमें सर्वत्र अध्यात्मोन्मुखी शिक्षा, प्रार्थनायोग तथा परस्पर एकत्वभाव यथाशीघ्र प्रतिष्ठित हों। भारतदेश शीघ्र ही विरोधियोंसे मुक्त वैदिक राष्ट्र बन जाय। हे चिदाकाश !

10. हे अद्‌भुत कृपानिधान सर्वात्मन्! भारत देशके मुख्य चुनावोंमें सद्‌भावी, योग्य तथा वैदिक मान्यता वाले व्यक्ति ही प्रबल बहुमतसे विजयी होकर सन्तोषप्रद प्रशासन करें और जनता इनका पूरा सहयोग करे। हे प्राज्ञ!

11. हे अद्वयस्वरूप परिपूर्ण! जीवनका परिनिर्वाण स्वस्थता, निरहंता तथा जाग्रतिपूर्वक अद्वय स्वरूपावस्थानरूप हो।

12. हे आकाश-प्रकाशरूप सर्वात्मन्! मैं निरहं आपकी शरणमें हूँ।

– बालकों के संरक्षक अपनी सन्तानके लिए यह प्रार्थनायोग करें–

''हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! मेरी होने वाली सन्तान या मेरा पुत्र/पुत्री या अमुक व्यक्ति (नाम) स्वस्थ, सद्‌भावी, सद्विवेकी, संयमी, अध्ययन-कुशल, सम्पन्न और सद्‌विद्याका/की अनुभवी रहे। शरणागत हूँ।''

-: प्रार्थना-विधि :-

सिर झुकाकर, मधुर-गम्भीर वाणीसे प्रत्येक वाक्यको बोलें। तब 20-30 या 60 सेकेण्ड गहरी निद्रामें अनुभव हुए सुखकी याद बनाए रखें। यह संकल्प सोनेसे पहले तथा जागनेके तुरन्त बाद अवश्य करें। इस प्रार्थनायोग को कोई भी दिनमें अनेक बार, कभी भी, कहीं भी कर सकता है। यह संकल्प या प्रार्थना आपको विधिसे करनी है और अन्य लोगोंसे भी प्रतिदिन करवानी है। यह आध्यात्मिक उपाय है तथा आधिदैविक कृपा भी। इसे तीन वर्षके बच्चेसे लेकर बीमार, बूढ़े तक सभी कर सकते हैं। कभी भी, कहीं भी।

सभी क्षेत्रोंके लिए केवल यही अमोघ युक्ति है। भौतिक प्रयासके लिए शक्ति व समझ भी इसी उपायसे मिलते हैं। लोक व शास्त्रमें इसके सिवाय अन्य कोई साधन है ही नहीं। यह संकल्पयोग निर्विकल्प होते ही प्रभावोंको अभिव्यक्त कर देगा। संकल्प या प्रार्थना नियति और प्रतीतिको व्यक्ताव्यक्त कर देती है। क्रतुमयोऽयं पुरुषः। चिद्धारणां धारयतः का सा सिद्धिः सुदुर्लभा। चरैवेति चरैवेति। संकल्पं ब्रह्म। तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु, आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः।

-: संकल्पशक्तिके लिए सहायक नियम :-

सबको हाथ जोड़कर, सिर झुकाकर, भगवद्भावपूर्वक प्रणाम किया करें। जब भी बैठना हो, प्रायः एक निश्चित आसन पर ही बैठें। प्रायः मुस्कुराते रहें। Work while you work . जिसमें सबका हित हो, वैसा व्यवहार करें। मैं मानव हूँ। मेरा धर्म मानवता है। ऐसा मानें। परमात्मा तत्त्व है। अनन्त अस्तित्व और आनन्द है। साक्षादपरोक्ष सर्वत्रा, सर्वदा और सर्वरूपोंमें उपस्थित है। मेरा कर्तव्य है- विविक्तके अनुसार वृत्ति बनाना। शरीरमें कहीं भी खुजलाना छोड़ दें। जो कुछ भी जाना जा रहा है, वह सब किसमें प्रतीत होता है? उसका अनुभव करें। उत्तिष्ठत, जाग्रत, निबोधत।

-: स्वस्थशरीरमाद्यं खलु सर्वार्थसाधनम् :-

तैत्तिरीयोपनिषद्का अनुसन्धान है कि ये सब चराचर जीवन चेतन-आनन्दसे ही व्यक्त हुए हैं। निरामय-शुद्ध चिदाकाशमें ही तन-मन सब ओत-प्रोत हैं। जीवनका प्रयोजन आनन्द है- यह भी विचार तथा श्रुतिसे सिद्ध है। कोई भी व्यक्ति

प्रतिकूलता नहीं चाहता। अर्थात् आधि-व्याधि- भ्रान्तिमय जीवन अस्वाभाविक है। प्रत्येक जीवन प्रतिक्षण अपनी मूल प्रकृतिकी ओर लौट रहा है। फिर भी तनमें व्याधियाँ और मनमें विकार प्रतीत होनेका कारण केवल कुसंगजन्य अयुक्त संकल्प ही है। अतः स्वस्थ रहनेके लिए और प्रातीतिक विकारोंसे असंग रहनेके लिए व्यासजी और योगेश्वर श्रीकृष्ण यह समाधान देते हैं- युक्ताहारविहारस्य युक्त-चेष्टस्य कर्मसु। युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा। (गीता अध्याय 6)

सम्यक् संकल्प, आहार-विहार तथा निद्राकी सम्यक्तासे तन-मन स्वस्थ रहेगा। इस युक्ताहार तथा युक्त विश्रान्तिकी रूपरेखा इसप्रकारसे है-

1. प्रातः नींबू तथा चूना या शंखभस्मयुक्त गर्म जल पीना।
2. प्रातः 1-2 चम्मच गोघृतके साथ सोंठ, बूरा, अजवाइनका चूर्ण गर्म जलसे लेना।
3. मुख्य युक्ति मिताहार है। जो हर चार घण्टे बाद ले सकते हैं।

फल, शाक कच्चे खाना। अंकुरित, रस, वनौषधि चाय, सप्ताहमें 2-3 बार सूखे मेवे, सप्ताहमें 3-4 बार ब्रह्म खिचड़ी, दूध या छाछ, सब्जी, गुड़ या खजूर।

4. आहारसे पूर्व प्रार्थनाके दूसरे वाक्यकी भावना करें।
5. आहारमें तदीक्षण करें।
6. आहारके पश्चात् हरड़, छोटी पिप्पली तथा पुराना गुड़ - इसकी घी में बनी गोली चूसें।
7. प्यासमें गर्म जल घूंट-घूंटकर पीयें।
8. अग्निसार क्रिया 5-5 मिनट प्रातः-सायं करते रहें।
9. प्रार्थनाके दूसरे वाक्यसे प्रतिदिन वर्धमान अनुष्ठान 20 मिनट अथवा दीर्घप्रणव 30 मिनट अवश्य करें।
10. सुषुप्ति-संकल्पका प्रयोग करें।
11. विधिपूर्वक सम्पूर्ण प्रार्थना कभी न छोड़ें। 24 घण्टेमें 3 बार।
12. आवश्यक होनेपर पपीता-पत्र, छोटी हरड़ व भूसी योग, हर्बोलिव वटी, गोमूत्र, शिवागुटिका, मेधावटी, रक्तशोधक वटीका सेवन करें।

13. स्वास्थ्यका आधार- अर्धरोगहरी निद्रा सर्वरोगहरी क्षुधा। युक्ताहार-विहारस्य0, प्राणापानसमायुक्तः। चौरासी लाख जीवन चीनी, चिकनाई, मसाले और अग्निसे पका नहीं खाते।................................

-: शिशुओंको महान् बनानेके लिए ये विविक्त निर्देश देते रहें :-

अभीष्ट संस्कारोंके लिए ये वाक्य सुनाने हैं। जब और जितनी देर बालक सोता है, उतनी देर या गर्भस्थ शिशुको या नेत्र बन्द कर जाग्रतमें भी नीचे बताये गये वाक्य धीर-गम्भीर वाणीसे सुनाने हैं। प्रत्येक वाक्यके बाद 5 सेकेण्ड रुकना है। ऑडियो प्लेयर द्वारा भी सुना सकते हैं। इन वाक्योंके अनुसार बालकोंसे बातें भी करनी चाहिए।

''श्रद्धा-विजिज्ञासासे सम्पन्न हे सत्पुरुष! तुम वस्तुतः परिपूर्ण हो, आनन्दस्वरूप हो। तुम्हारा सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय रहेगा। यह प्रतीयमान विश्व आनन्दसे ही व्यक्त हुआ है, आनन्दसे ही पोषित होता है और

आनन्दमें समा जाता है। अभेदमें ही पूर्णानन्द है। सुखाभासोंपर तुम्हारी विजय हो। तुम्हारा तन सर्वथा स्वस्थ है और आजीवन स्वस्थ ही रहेगा; क्योंकि तुम शरीर-विज्ञानकी सम्पूर्ण शिक्षासे समृद्ध रहोगे। तुम्हारा मन सबके प्रति सद्भावसे युक्त रहेगा। मनोविज्ञानकी सही शिक्षा तुम्हें प्राप्त रहेगी। संयमशक्ति और निरहंता तुम्हारा स्वभाव होगा। सत्संकल्प-विज्ञानमें तुम सिद्ध हो और रहोगे। तुम्हारी बुद्धि शुद्ध और सूक्ष्म है और आजीवन रहेगी। विविक्तके समादर एवं सदनुसरण-सामर्थ्यसे तुम युक्त हो- ऐसा अनुभव करो। तुम्हारी विवेकशक्ति और संकल्पशक्ति जीवनके समस्त भ्रमोंको अस्त रखेगी। तुम्हें अपने स्वरूपका, सबके स्वरूपका तथा जगत्‌की वास्तविकताका अतिशीघ्र साक्षात्कार हो जायगा, जिससे तुम अभी भी एक हो। तुम्हें सदैव अनुकूल, सद्भावयुक्त, जाग्रत, सुखमय परिवेश प्राप्त रहेगा, जिसका सबके लिए तुम विस्तार करोगे। तुम जाग्रतपुरुष हो। तुम्हारी सम्पन्नता तथा प्रभाव सदैव प्रकाशित रहेगा और सबको प्रकाशित करेगा। तुम्हारे पास विलक्षण और सत्यानुसारी स्मृति, मेधा तथा प्रतिभा उपस्थित है, जो कभी अस्त नहीं होंगे। तुम जीवन सम्बन्धी शिक्षामें विशेष व पूर्ण रहोगे।

उत्तम न्यायाधीश, सद्भावी-योग्य- प्रभावशाली प्रशासक, योगी, योगवैज्ञानिक, महापुरुष, संकल्पसिद्ध, योग्य शिक्षक, प्रतिभावान् विचारक, अदम्य योद्धा, ब्रह्मवित्, क्रान्तिकारी संगीतज्ञ, विराट् व्यापारी, विलक्षण अर्थशास्त्री, महान् चिकित्सक, हितैषी प्रचारक, अद्भुत मनोवैज्ञानिक, आविष्कारकके रूपमें अपने हितकारी व्यक्तित्वको व्यक्त करनेकी तुममें पूर्ण सामर्थ्य है। तुम बृहत् अमृत हो- यही सत्य है। अनुभव करो। तुम्हारी जय हो। तुममें सर्वात्मभावका विकास हो- ऐसा आशीर्वाद देता हूँ।'' उत्तिष्ठत जाग्रत निबोधत।

सर्वसमाधान की खोज

हम मनुष्यकी आकृतिमें व्यक्त हैं। हमें यह जीवन मिला है। इसे सन्तोषसे, सुखसे और सही समझसे व्यतीत करना है। जीनेकी प्रक्रिया क्या होनी चाहिए? क्या आप कोई ऐसा उपाय, साधना, रास्ता- पथ, युक्ति या समाधान बता सकते हैं जो-

1. सब प्रकारके उपायों, युक्तियों, समाधानोंमें अनुगत हो, common हो?

2. जो सभी प्रकारकी समस्याओंका हल हो। सभी प्रकारकी इच्छाओंको पूरी कर सकता हो। इष्टकी प्राप्ति करा सकता हो, अनिष्टको निवृत्त कर सकता हो? गुरुओंका गुरु, ईश्वरोंका ईश्वर हो।

3. परमात्माका साक्षात्कार करानेमें अन्यतम हो?

4. गर्भावस्थासे मरणके पूर्वतक जो किया-सोचा जा सकता हो? जिसे सब प्रकारके मनुष्य कर सकते हों?

5. जिसमें रहा जा सकता हो, जिया जा सकता हो?

6. जो शर्तोंसे मुक्त हो। सब समय, सब जगह किया जा सकता हो?

7. जो सहजतासे, स्वीकृति मात्रसे हो सकता हो?

8. जो स्वभावके प्रतिकूल न हो? जिसमें पूरी स्वतन्त्रता हो?

9. जिसे हम सब जाने-अनजानेमें करते भी रहते हों।

10. जिसका प्रयोग करके ही कोई महापुरुष या विशेष व्यक्ति बना हो।

11. जो प्रभावशाली हो और कभी भी व्यर्थ न होता हो?

12. जो सभी पन्थोंमें, सभी धर्मोंमें, सभी सम्प्रदायोंमें, सभी

शास्त्रोंमें, सभी पुरुषार्थोंमें, सभी दर्शनोंमें हो?

13. जो सुलभ हो, सरल हो, सबके लिए समझने योग्य, करने योग्य हो?

14. जिसके प्रयोगमें कष्ट न हो, तत्काल शान्तिका अनुभव हो? जो तीव्र गतिसे साकार हो जाता हो?

15. जो सब प्रकारके साधनोंका मूल, मध्य तथा पूर्णता हो?

16. जो मान्यताके अनुकूल हो, सरलतासे समझा जा सकता हो, विवेकयुक्त हो, विज्ञानपूर्वक हो, आजीवन हो सकता हो?

17. सभी साधन जिसमें समाहित हों, सर्वसाधन रूप हो, सारे प्रतिबन्धोंमें अपवाद हो?

18. सम्पूर्ण मतभेदों, अहंकारों, मान्यताओं, प्रतिबन्धों, विघ्नोंसे मुक्त हो, परे हो?

19. जो सृष्टि-स्थिति-प्रलयका हेतु हो?

20. जो सम्पूर्ण नकारात्मक विचारों (Negativities) को, भ्रान्तियोंको, अज्ञानको, प्रतिकूलताओंको, हटा-मिटा सकता हो?

21. जिसका कोई side effect अन्यथा प्रभाव न हो ?

सबकुछ के लिए ॥& सर्वमान्यताओंमें, सर्व विचारधाराओंमें, सर्व दर्शनोंमें, वेदोंमें, सर्व अनुभवोंमें, सर्व साधनाओंमें जो भी परं निष्कर्ष सर्वश्रेष्ठ है, जो भी श्रेय-प्रेय-ध्येय-ज्ञेय-उपादेय हो सकता है, जो सर्वानुगत है, अव्यर्थ-अमोघ है, जो भी प्राप्तव्य है, कर्तव्य है, सब उपायोंका मूल है, अन्यथा प्रभावों (side effect)से सर्वथा मुक्त है, जो भी सरलतम सुलभ है, जिसके सिवाय अन्य कोई युक्ति कहीं भी नहीं है, न हो सकती है। जो श्रद्धासे, विश्वाससे, विचारसे उपलब्ध है, जो सबका सेतु है, द्वार है- वह है- सम्यक्तया विधिपूर्वक किया गया शिवसंकल्प, भद्र संकल्प, सत्संकल्प, परं positive विधेयात्मक विचार या प्रार्थना। मूल यही है- आश्रय यही है- शेष तो इसीके रूप हैं। बस, निर्विकल्पतासे लग जाइये। तब भ्रान्तियाँ मिट जायेंगी, प्रकाश हो जायेगा। भटकाव, प्रतिकूलता आदि अस्त हो जायेंगे।

सर्वयोगक्षेम-सर्वसमाधानके लिये, सब प्रकारकी समस्याओं, तनावों, उलझनोंको मिटानेके लिये, मनोराज्यकी शान्तिके लिये, सुषुप्तिके लिये, सद्भाव बढ़ानेके लिये आप निर्दिष्ट संकल्पयोग या प्रार्थनायोगका लगातार प्रयोग करें।

&॥ मानव-मनोविज्ञान ॥&

यह तथ्य है कि जैसी दृष्टि होगी, वैसी ही प्रतीति होगी। जैसी विद्या-शिक्षा-दीक्षा होगी, वैसी ही दृष्टि बनेगी। जैसा संकल्प होगा, वैसी ही शिक्षाकी व्यवस्था होगी। जिसकी जैसी समझ है या जो भी अपनेको जैसा मानता अथवा जानता है, या जो भी जो है, वह सब उसके चिन्तनका अनिवार्य प्रभाव है। चिन्तन ही उसे बलात् वैसा प्रतीत करा रहा है।

यह नियम है, अनादि संकल्प है कि जिधर ध्यान दोगे, वह व्यक्त रहेगा, जिधरसे ध्यान हटाओगे, वह अव्यक्त हो जायेगा। इसलिये चिन्तन कैसा होना चाहिये? किस प्रकार करना चाहिए? यह शिक्षा पर निर्भर है। ज्ञानके समादरमें

सर्वप्रथम और बलवान् होती है- स्वीकृति।

अल्पजीवनको सम्यक्तया जीनेके लिये संस्कार-प्रक्रिया और ज्ञानादर-प्रक्रियाका प्रयोग होता है। ज्ञानादर प्रक्रियामें चेतनताकी, सत्यकी प्रधानता है और संस्कार-प्रक्रियामें प्रकृतिकी, तथ्योंकी प्रधानता है।

यह तथ्य है कि जैसा चिन्तन होगा, वैसा ही चित्त व चेत्य बन जायगा। जैसा चेतन (चित्) है, वैसा ही चिन्तन, वैसा ही चित्त और वैसा ही चेत्य होना चाहिए। चेतन आनन्दस्वरूप है। अत: चिन्तन चिन्मय- आनन्दमय, चित्त जाग्रत आनन्दमय और चेत्य अनुकूल होना चाहिए।

यह अनादि और प्रथम संकल्प है कि जो जब-जहाँ-जैसा चिन्तन करेगा, उसीके अनुरूप ही उसे प्रतीति होगी। अत: अनात्म-सम्पर्क और प्रमाद इसी क्षण छोड़ दो। सुषुप्तिमें जो अनन्त अद्वय आनन्दमयी जाग्रति रहती है, उसकी भावना-धारणा- ध्यान करो, जितने क्षण हो सके। इसकी अवधि धीरे- धीरे बढ़ाते रहो। अन्यकालमें परस्पर या स्वयं विजिज्ञासा शैलीसे विचार करो, जितना हो सके।

अहं या चिन्तनके अनुसार ही सब प्रतीत होता है, अपनेपर ध्यान देते रहनेसे आनन्द व्यक्त रहेगा। अन्यपर ध्यान

देंगे तो अपना आपा अव्यक्तप्राय हो जायगा अर्थात् प्रतिकूल वेदनायें और प्रतिकूल परिस्थितियाँ आनी शुरु हो जायँगी। विचार और ध्यान सबसे श्रेष्ठ और विशेष प्रभावशाली है। आप श्रद्धासे इन्हींका प्रयोग करें।

जीवन व समस्याएँ एकांगी नहीं होते। अत: उपाय भी सर्वांगीण होने चाहिए। अर्थात् तीनों उपाय साथ-साथ होने चाहिए।आध्यात्मिक उपायोंका आश्रय लेना निरापद, दीर्घजीवी और अमोघ होता है।

किसीको समझाना, सिखाना, अनुकूल बनाना सदासे दुर्घट रहा है। उसमें दुष्परिणामेंका प्रवाह भी बना रहता है। जबकि आध्यात्मिक युक्तियाँ तो बुद्धि, भाव और क्रियाको, विवेकानुसार अभीष्ट दिशामें व्यवस्थित कर देती हैं।

उपाय न करके केवल समस्याओंकी चर्चा करते रहना, समस्याओंका रोना रोते रहना, उनकी चिंता करते रहना- ये अनभीष्ट प्रभाव उत्पन्न करते हैं। अत: हम सबको प्रार्थनायोग या संकल्पयोगपूर्वक भौतिक प्रयास में पूरी शक्ति व समझसे लग जाना चाहिए। इसीमें हम सबका हित व सुख है। क्या आप इस दृष्टिको स्वीकार करेंगे?

ॐ ब्रह्म सर्वम्

7015162166, 7015154878, 9319170555

(17)

(18)

भावेऽहमः सर्वमिदं विभाति
लयेऽहमो नैव विभाति किंचित्
तस्मादहं रूपमिदं समस्तं
तन्मार्ग सर्वजयाय मार्गः। (महर्षि रमण)

अहंभावके उदय होते ही यह सब प्रतीत होने लगता है। अहंभावके लय होते ही कुछ भी प्रकाशित नहीं होता। अर्थात् यहसब मैं (चेतन)का ही रूप है। इस मैंके स्वरूपका अनुसन्धान-प्रत्यक् प्रवणता ही इन सबके अतिक्रमणकी सम्यक् साधना है।

आनन्दं ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते आनन्देन जातानि जीवन्ति
आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। (तैत्तिरीयोपनिषद्)

विजिज्ञासुने निर्देशानुसार तपसे (बृहत् भावनासे) यह अनुभव किया कि आनन्द ही ब्रह्म चेतन है। यह निर्विकल्प है कि आनन्दसे ही यह सब चराचर व्यक्त हुआ है। यह व्यक्त उसीसे ही प्रवाहित रहता है। और आनन्दमें प्रलीन होकर वही हो जाता है। अतः यह सबकुछ आनन्द ब्रह्म ही है।

(21) (22)

(23) (24)

(25)

(26)

(27) (28)

(29) (30)

(31)

(32)

(33)

(34)

(35) (36)

(37) (38)

(39) (40)

(41) (42)

(43)

(44)

(45)

(46)

(47) (48)

(49) (50)

(51)

(52)